राजस्थान पत्रिका

'आम जनता के काम आएं शोध'

वन प्रबंधन और विज्ञान के साथ सामाजिक व आर्थिक मुद्दों पर खास ध्यान

कार्यालय संवाददाता @ जोधपुर

वानिकी के क्षेत्र में हो रहे नवीन शोध को किसानों और आम जनता के लिए उपयोगी बनाने के प्रयास हो रहे हैं। यह

साल अंतरराष्ट्रीय वानिकी वर्ष के रूप में मनाया जा रहा है। इसलिए भविष्य में वन प्रबंधन और विज्ञान के साथ ही सामाजिक व आर्थिक मुद्दों पर खास ध्यान दिया जा रहा है। इस साल नवंबर में दिल्ली में आयोजित होने वाली भारतीय वन कांग्रेस का विषय भी भावी अनुसंधान कैसे हों तथा साधारण के लिए वे किस तरह उपयोगी हों? इसका ध्यान रखा जा रहा है। इसमें देश-विदेश के करीब एक हजार वैज्ञानिक भाग लेंगे। यूएनडीपी भी इसमें सहयोग करेगा। राष्ट्रीय स्तर की इस कांग्रेस के सम्बन्ध में 19 जुलाई को जोधपुर में भी कार्यशाला होगी। भारतीय वानकी अनुसंधान व शिक्षा परिषद (आईएफआरई) देहरादून के महानिदेशक डॉ. वीके. बहुगुणा ने सोमवार को आफरी सभागार में आयोजित प्रेस वार्ता में बताया कि वन सम्बन्धी शोध संस्थानों में किसानों को नई विकसित की जा रही तकनीकों से अवगत करवाने को (आईएफआई) की ओर से प्रशिक्षण केन्द्र खोलने के लिए तैयारी की जा रही है। आफरी शुष्क क्षेत्र के वनों के पास गांवों में एग्रो फॉरेस्ट्री के जरिये वर्षा जल संग्रहण की ऐसी तकनीक विकसित करने के प्रयास करेगा, जिससे वहां कुओं का जलस्तर बढ़े। साथ ही घास, नीम, इमली व बेर के पौधे भी लगाए जाएंगे। आफरी की ग्यारह में से आठ योजनाओं को केन्द्र से स्वीकृति मिल गई है। वहीं शुष्क वन अनुसंधान संस्थान (आफरी) के निदेशक त्रिलोकसिंह राठौड़ ने संस्थान की गतिविधियों पर प्रकाश डाला। उन्होंने बताया कि लूणी नदी में उद्योगों का गंदा पानी मिलने से पानी दूषित हो जाता है। वहां पेड़-पौधे लगा कर पानी स्वच्छ बनाने की दिशा में प्रयास किए जा रहे हैं। उन्होंने बताया कि वनों के क्षेत्र में किए जाने वाले प्रयोगों का कई वर्षों बाद असर दिखाई देता है।

आएंगे क्लोन

आफरी की ओर से गुजरात के सफेदा और शीशम के पांच-पांच क्लोन करीब एक साल के भीतर जारी किए जाएंगे। इससे पेड़ की विकास दर बढ़ जाने से कागज उत्पादन और हस्तशिल्प आदि के लिए काफी लकड़ी प्राप्त होगी।

N K Bohra

राजस्थान पत्रिका

21 जून 2011

जोधपुर. मंगलवार, 21 जून 2011

आफरी के नौ नए प्रोजेक्ट मंजूर

डॉ. वीके बहुगुणा।

इंडियन फोरेस्ट्री कांग्रेस नवंबर में

जोधपुर। भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद (आईसीएफआरई) देहरादून के महानिदेशक डॉ. वीके बहुगुणा ने बताया कि आफरी के 9 नए प्रोजेक्ट मंजूर कर दिए हैं। नवंबर में दिल्ली में इंडियन फोरेस्ट्री कांग्रेस होने वाली है। इसमें देश-विदेश से 100 से अधिक वैज्ञानिक शामिल होंगे। इसकी विस्तृत रूपरेखा बनाने के लिए जोधपुर आफरी में 19 जुलाई को प्री कांग्रेस का आयोजन किया जाएगा। भारतीय वन सेवा के वरिष्ठ अधिकारी डॉ. बहुगुणा पिछले माह डीजी बनने के बाद पहला दौरा जोधपुर का किया है। मीडिया से बात करते हुए उन्होंने बताया कि इंडियन फोरेस्ट्री कांग्रेस में जलवायु परिवर्तन पर हुए शोध पर चर्चा कर उसे जन उपयोगी बनाने का निर्णय लिया जाएगा।

सफेदा व शीशम के क्लोन बनाए

आफरी निदेशक डॉ. त्रिलोकसिंह राठौड़ ने बताया कि राजस्थान और गुजरात में शोध करने वाली यह संस्था सफेदा व शीशम के पांच-पांच क्लोन तैयार करने में जुटी है। यह शोध कार्य एक साल में पूरा हो जाएगा। ये तेजी से बढ़ने वाले पेड़ होंगे तथा लकड़ी भी ज्यादा मात्रा में मिलेगी। इस लकड़ी का उपयोग फर्नीचर व हैंडीक्राफ्ट में किया जा सकेगा।

डीजी ने किया आफरी का निरीक्षण

दो दिन के जोधपुर दौरे पर आए डीजी बहुगुणा ने सोमवार दोपहर बाद आफरी का निरीक्षण किया। उन्होंने सभी वैज्ञानिकों से विभिन्न प्रोजेक्ट पर चल रहे शोध पर विस्तृत चर्चा की, फिर स्टाफ से मिल कर उनकी समस्याएं भी पूछी। जोधपुर पहुंचने पर आफरी निदेशक डॉ. राठौड़ व वरिष्ठ वैज्ञानिकों ने उनका स्वागत किया। डीजी बहुगुणा मंगलवार को आफरी के प्रायोगिक क्षेत्रों का दौरा कर दिल्ली के लिए प्रस्थान करेंगे।

N K Bohra

दैनिक भास्कर

21 जून 2011

जलवायु परिवर्तन से निपटना प्रमुख समस्या बनी : डॉ. बहुगुणा

जोधपुर 20 जून। जलवायु परिवर्तन से निपटना आज विष्व भर में सबसे प्रमुख समस्या है। इसके कारण कही बाढ़ तो कही सूखा जैसी परिस्थितिया हो रही है। इन सभी के सम्मिलित प्रभाव से खाद्यान्न का उत्पादन भी प्रभावित होता है जिसका प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से प्रभाव सामाजिक एवं आर्थिकी पर पड़ता है। यह विचार भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद्, देहरादून के महानिदेपक डॉ. वी.के. बहुगुणा ने शुष्क वन अनुसंधान संस्थान (आफरी) में पत्रकारो से बातचीत करते हुएँ व्यक्त किए।

डॉ. बहुगुणा ने बताया कि कबाइली लोगों के लिए बनाये गये वानिकी कानून से उन्हे स्थानीय वानिकी पर अधिकार तो मिला है परन्तु आज इस बात की जरूरत है कि इन क्षैत्रों में किस प्रकार टिम्बर एवं अन्य अकाष्ठ उत्पादों का उत्पादन बढ़ाकर इन कबाइली क्षैत्रों की आर्थिक उन्नति बढाई जाए। उन्होने बताया कि आज की आवष्यकता है कि किसानों के आस-पास की भूमि ने नवीन वानिकी तकनीको का उपयोग कर उत्पादन बढाया जाए। जिससे उनकी आर्थिक उन्नति हो सके। मरू क्षैत्र के बारे में डॉ. बहुगुणा ने बताया कि गाँवो मे परम्परागत एवं गैर परम्परागत तकनीको के साथ वैज्ञानिक ढंग से वर्षा जल संरक्षण, कृपि वानिकी आदि को अपनाना चाहिए जिससे जल एवं मृदा संरक्षण के साथ उत्पादकता बढाकर क्षैत्र की आर्थिक - सामाजिक उन्नति हासिल की जाए। डॉ. बहुगुणा ने बताया कि भारत में वानिकी 150 वर्ष से अधिक पुरानी हो चुकी है तथा इस वर्ष को अंतराष्ट्रीय वानिकी वर्ष के रूप में मनाया जा रही है। इसके उपलक्ष मे आगामी 22 से 25 नवम्बर तक नई दिल्ली मे भारतीय वानिकी काग्रेस का आयोजन किया जा रहा है जिसमें देश विदेश के 100 से अधिक विषय विशेपज्ञ भाग लेगें। डॉ. बहुगुणा ने बताया कि भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद्, देहरादून को वानिकी कार्यो का परिवेक्षण करने हेतु अधिकृत किया गया है। इस अवसर पर आफरी निदेशक डॉ. टी.एस. राठौड़ ने बताया कि शुष्क पारिस्थितिकी तंत्र विश्व के अत्यन्त दुष्कर इकोसिस्टम में से एक है क्योंकि यहाँ के आस पास के क्षैत्रो में पर्यावरणीय बदलाव के चलते इसका तुरन्त प्रभाव पड़ रहा है। अत: इस क्षैत्र का प्रंबधन इस प्रकार से करना जरूरी है जिससे पारिस्थितकी बदलाव में परिवर्तन किए बिना जीवन तंत्र को बनाये रखा जा सके। उन्होने बताया कि आफरी मृदा एवं जल संरक्षण, समस्या के क्षेत्र में वानिकी तकनीकी और जैविक खाद एवं जैव पेस्टीसाइड, कृपि वानिकी आदि द्वारा क्षेत्र की समस्या को हल करने हेतु प्रयासरत है। डॉ. बहुगुणा ने आफरी के वैज्ञानिको, अधिकारियों एवं कर्मचारियों से मंत्रणा कर आफरी द्वारा किये जा रहे शोध कार्यो की समीक्षा की। वे कल आफरी प्रायोगिक क्षेत्रों का भ्रमण कर जोधपुर से प्रस्थान करेगे।

जलवायु परिवर्तन से निपटना सबसे प्रमुख समस्या : बहुगुणा

भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद् देहरादून के महानिदेशक ने किया आफरी का दौरा

मरु लहर न्यूज

जोधपुर, 20 जून। जलवायु परिवर्तन से निपटना आज विश्व भर में सबसे प्रमुख समस्या है। इसके कारण कही बाढ़ तो कही सूखा जैसी परिस्थितिया हो रही है। इन सभी के सम्मिलित प्रभाव से खाद्यान्न का उत्पादन भी प्रभावित होता है जिसका प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से प्रभाव सामाजिक एवं आर्थिकी पर पड़ता है। यह उद्गार भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद्, देहरादून के महानिदेशक डॉ. वी.के. बहुगुणा ने शुष्क वन अनुसंधान संस्थान (आफ्री) में पत्रकारो से बातचीत करते हुएँ व्यक्त किए।

डॉ. बहुगुणा ने बताया कि कबाइली लोगों के लिए बनाये गये वानिकी कानून से उन्हे स्थानीय वानिकी पर अधिकार तो मिला है परन्तु आज इस बात की जरूरत है कि इन क्षेत्रों में किस प्रकार टिम्बर एवं अन्य अकाष्ठ उत्पादों का उत्पादन बढ़ाकर इन कबाइली क्षेत्रों की आर्थिक उन्नति बढाई जाए। उन्होने बताया कि आज की आवश्यकता है कि किसानों के आस-पास की भूमि ने नवीन वानिकी तकनीको का उपयोग कर उत्पादन बढाया जाए। जिससे उनकी आर्थिक उन्नति हो सके।

मरू क्षैत्र के बारे में डॉ. बहुगुणा ने बताया कि गॉवो मे परम्परागत एवं गैर परम्परागत तकनीको के साथ वैज्ञानिक ढंग से वर्षा जल संरक्षण, कृषि वानिकी आदि को अपनाना चाहिए जिससे जल एवं मृदा संरक्षण के साथ उत्पादकता बढाकर क्षैत्र की आर्थिक - सामाजिक उन्नति हासिल की जाए।

डॉ. बहुगुणा ने बताया कि भारत में वानिकी 150 वर्ष से अधिक पुरानी हो चुकी है तथा इस वर्ष को अंतराष्ट्रीय वानिकी वर्ष के रूप में मनाया जा रही है। इसके उपलक्ष मे 22 से 25 नवम्बर 2011 तक नई दिल्ली मे भारतीय वानिकी कांग्रेस का आयोजन किया जा रहा है जिसमें देश विदेश के 100 से अधिक विषय विशेषज्ञ भाग लेगें। इस कांग्रेस द्वारा वनों का आम जनता के लिए उपयोगी बनाने एवं वनो एवं वन उत्पादो से देश की आमदनी बढाने आदि के लिए मंथन किया जायेगा। इससे वानिकी के भावी शोध कार्यक्रमों की रूपरेखा तैयार की जाएगी।

उन्होने बताया कि भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद्, देहरादून को ऐव् 9000 का सर्टिफिक्केट दिया गया है। इसके तहत् 8 संस्थान देश के विभिन्न क्षेत्रों के कार्यरत है जिसमें आफ्री, राजस्थान एवं गुजरात तथा दादरा नगर हवेली में कार्यरत है। डॉ. बहुगुणा ने बताया कि भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद्, देहरादून को वानिकी कार्यो का परिवेक्षण करने हेतु अधिकृत किया गया है। इस अवसर पर आफ्री निदेशक डॉ. टी.एस. राठौड़ ने बताया कि शुष्क पारिस्थितिकी तंत्र विश्व के अत्यन्त दुश्कर इकोसिस्टम में से एक है क्योंकि यहाँ के आस पास के क्षैत्रो में पर्यावरणीय बदलाव के चलते इसका तुरन्त प्रभाव पड़ रहा है। अत: इस क्षैत्र का प्रंबधन इस प्रकार से करना जरूरी है जिससे पारिस्थितकी बदलाव में परिवर्तन किए बिना जीवन तंत्र को बनाये रखा जा सके। उन्होने बताया कि आफ्री मृदा एवं जल संरक्षण, समस्या के क्षेत्र में वानिकी तकनीकी और जैविक खाद एवं जैव पेस्टीसाइड, कृषि वानिकी आदि द्वारा क्षेत्र की समस्या को हल करने हेतु प्रयासरत है।

डॉ. बहुगुणा ने आफ्री के वैज्ञानिको, अधिकारियों एवं कर्मचारियों से मंत्रणा कर आफ्री द्वारा किये जा रहे शोध कार्यो की समीक्षा की। वे कल आफ्री प्रायोगिक क्षेत्रों का भ्रमण कर जोधपुर से प्रस्थान करेगे।

NKBohra

दैनिक मरु लहर 21 जून 2011

नई तकनीक से उत्पादन बढ़ाने की आवश्यकता: डॉ. बहुगुणा

जोधपुर, 20 जून (कासं)। भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद देहरादून के महानिदेशक डॉ वी.के बहुगुणा ने कहा कि किसानों की आर्थिक उन्नति के लिए नवीन वानिकी तकनीक का उपयोग कर उत्पादन बढाने की आवश्यकता है।

वे आज यहां पत्रकारों से बातचीत कर रहे थे। उन्होने कहा गांव में परंपरागत एवं गैर परंपरागत तकनीकों के साथ वैज्ञानिक ढंग से वर्षा जल संरक्षण, कृषि वानिकी को अपनना चाहिए। जिससे जल एवं मृदा संरक्षण के साथ उत्पादकता बढाकर क्षेत्र का आर्थिक व सामाजिक विकास होगा।

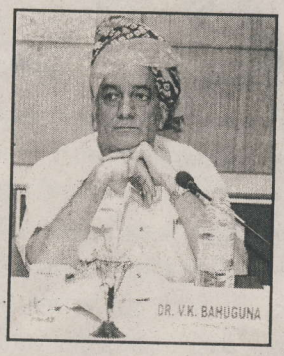

देश में वानिकी 150 वर्षो से अधिक पुरानी हो गई है। वानिकी कानून बनने से कबाइली लोगों को अधिकार तो मिला है परंतु इन क्षेत्रों में टिम्बर एवं अन्य कास्ठ उत्पादों का उत्पादन बढाकर आर्थिक उन्नति करने की आवश्कता है। जन वायु परिवर्तन से निपटना आज विश्व की प्रमुख समस्या है इसके चलते कहीं बार कहीं सूखे की स्थिति उत्पन्न हो रही है। इनके सम्मिलित प्रभाव से खाद्यन का उत्पादन भी प्रभावित हो रहा है। जिसका प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष प्रभाव सामाजिक एवं आर्थिक विकास पर पडता है। डॉ बहुगुणा ने बताया कि इस वर्ष अंतर्राष्ट्रीय वानिकी वर्ष के रूप में मनाया जाएगा। इसके तहत 22 से 25 नवम्बर तक नई दिल्ली में भारतीय वानिकी कांग्रेस का आयोजन किया जाएगा। जिसमें देश के विदेश के 100 से अधिक विशेषज्ञ शिकरत करेंगे।

आफरी निदेशक डॉ. राठौड़ ने बताया कि महानिदेशक बहुगुणा ने मरु क्षेत्र की विभिन्न परियोजनाओं जैसे कृषि वानिकी, वर्षा जल संरक्षण, टिब्बा स्थिरीकरण, उच्च गुणवत्ता के पादपों के लिए नर्सरी तकनीकी आदि का निरीक्षण किया। डॉ. बहुगुणा मणिपुर-त्रिपुरा कैडर के 1979 बैच के वरिष्ठ भारतीय वन सेवा अधिकारी हैं। वे विभिन्न राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय पुरस्कारों से सम्मानित हो चुके हैं। उन्हें 2006 में तत्कालीन राष्ट्रपति एपीजे अब्दुल कलाम ने इंडियन एक्सप्रेस इनोवेशन पुरस्कार भी दिया था।

इससे पूर्व डॉ बहुगुणा ने आफरी के वैज्ञानिक द्वारा किये गये शोध कार्यो की समीक्षा की।

जलते दीप 21 जून 2011

दैनिक प्रतिनिधि

जलवायु परिवर्तन विश्व भर मै बना चुनौती -बहुगुणा

जोधपुर 20 जून (कांस)। जलवायु परिवर्तन से निपटना आज विश्व भर मे सबसे प्रमुख समस्या है। इसके कारण कही बाढ तो कही सूखा जैसी परिस्थितियां हो रही है। इन सभी के सम्मिलित प्रभाव से खाद्यान्न का उत्पादन भी प्रभावित होता है। जिसका प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रुप से प्रभाव सामाजिक एवं आर्थिकी पर पडता है। यह उदगार भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद, देहरादूर के महानिदेशक डॉ.वी.के बहुगुणा ने शुष्क वन अनुसंधान संस्थान (आफरी) मे पत्रकारो से बातचीत करते हुए व्यक्त किए।

पत्रकार वार्ता में बहुगुणा सवालो का जवाब देते हुए

डॉ.बहुगुणा ने बताया कि कबाईलो लोगो के लिए बनोय गये वानिकी कानून से उन्हे स्थानीय वानिकी पर अधिकार तो मिला है परन्तु आज इस बात की जरुरत है कि इन क्षेत्रो मे किस प्रकार टिम्बर एवं अन्य अकाष्ठ उत्पादो का उत्पादन बढाकर इन कबाइली क्षेत्रो की अर्थिक उन्नति बढाई जाए। उन्होने बताया कि आज की आवश्यकता कि किसानो के आस पास की भूमि ने नवीन वानिकी तकनीको का उपयोग कर उत्पादन बढाया जाए। जिससे उनकी आर्थिक उन्नति हो सके।

मरु क्षेत्र के बारे मे डॉ.बहुगुणा ने बताया कि गांवो मे परम्परागत एवं गैर परम्परागत तकनीको के साथ वैज्ञानिक ढंग से वर्षा जल संरक्षण, कृषि वानिकी आदि को अपनाना चाहिए जिससे जल एवं मृद्व संरक्षण के साथ उत्पादकता बढाकर क्षेत्र की आर्थिक-सामाजिक उन्नति हासिल की जाए।

डॉ.बहुगुणा ने बताया कि भारत मे वानिकी 150 वर्ष से अधिक पुरानी हो चुकी है तथा इस वर्ष को अंतराष्ट्रीय वानिकी वर्ष के रुप मे मनाया जा रही है। इसके उपलक्ष मे 22 से 25 नवम्बर 2011 तक नई दिल्ली मे भारतीय वानिकी कांग्रेस का आयोजन किया जा रहा है। जिसमे देश विदेश के एक हजार से अधिक विषय विशेषज्ञ भाग लेगे। इस कांग्रेस द्वारा वनो का आम जनता के लिए उपयोगी बनाने एवं वनो एवं वन उत्पादो से देश की आमदनी बढाने आदि के लिए मंथन किया जायेगा। इससे वानिकी के भावी शोध कार्यक्रमो की रुपरेखा तैयार की जायेगी। उन्होने बताया कि भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद, देहरादूर को आईएसओ 9000 का सर्टिफिकेट दिया गया है। इसके तहत 8 संस्थान देश के विभिन्न क्षेत्रो के कार्यरत है। जिसमे आफरी, राजस्थान एवं गुजरात तथा दादरा नगर हवेली मे कार्यरत है। डॉ.बहुगुणा ने बताया कि भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद देहरादून को वानिकी कार्यो का परिवेक्षण करने हेतु अधिकृत किया गया है। इस अवसर पर आफरी निदेशक डॉ.टी एस राठौड ने बताया कि शुष्क पारिस्थितिकी तंत्र विश्व के अत्यन्त दुष्कर इकोसिस्टम मे से एक है क्योकि यहां के आस पास के क्षेत्रो मे पर्यावरणीय बदलाव के चलते इसका तुरन्त प्रभाव पड रहा है अत: इस क्षेत्र का प्रबधन इस प्रकार से करना जरुरी है। जिससे पारिस्थितकी बदलाव मे परिवर्तन कि.ए बिना जीवन तंत्र को बनाये रखा जा सके। उन्होने बताया कि आफरी मृद्व एवं जल संरक्षण, समस्या के क्षेत्र मे वानिकी तकनीकी और जैविक खाद एवं जैव पेस्टीसाइड, कृषि वानिकी आदि द्वारा क्षेत्र की समस्या के हल करने हेतु प्रयासरत है। डॉ.बहुगुणा ने आफरी के वैज्ञानिको, अधिकारियो,एवं कर्मचारियो से मंत्रणा कर आफरी द्वारा किये जॉ रहे शोध कार्यो की समीक्षा की। वे कल आफरी प्रायोगिक क्षेत्रो का भ्रमण कर जोधपुर से प्रस्थान करेंगे।

दैनिक प्रतिनिधि 21 जून 2011

भारतीय वानिक कांग्रेस 22 नवंबर से दिल्ली में

वनों से देश की आमदनी बढ़ाने पर होगा मंथन

● नवज्योति टीम

जोधपुर । भारत में वानिकी 150 वर्ष से अधिक पुरानी हो चुकी है तथा इस वर्ष को अंतरराष्ट्रीय वानिकी वर्ष के रूप में मनाया जा रही है। इसके उपलक्ष मे 22 से 25 नवम्बर 2011 तक नई दिल्ली में भारतीय वानिकी कांग्रेस का आयोजन किया जा रहा है जिसमें देश विदेश के 100 से अधिक विषय विशेषज्ञ भाग लेंगे। भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद, देहरादून के महानिदेशक डॉ. वी.के. बहुगुणा ने शुष्क वन अनुसंधान संस्थान में पत्रकारों से बातचीत करते हुए यह जानकारी दी।

बहुगुणा ने बताया कि इस कांग्रेस द्वारा वनों का आम जनता के लिए उपयोगी बनाने, वनो एवं वन उत्पादों से देश की आमदनी बढाने आदि के लिए मंथन किया जायेगा। इससे वानिकी के भावी शोध कार्यक्रमों की रूपरेखा तैयार की जाएगी।

उन्होने बताया कि भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं षिक्षा परिषद्, देहरादून को आईएसओ 9000 का सर्टिफिकेट दिया गया है। इसके तहत् 8 संस्थान देश के विभिन्न क्षेत्रों के कार्यरत है जिसमें आफरी, राजस्थान एवं गुजरात तथा दादरा नगर हवेली में कार्यरत है। एक प्रश्न के जवाब में डॉ. बहुगुणा ने बताया कि भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद, देहरादून को वानिकी कार्यो का परिवेक्षण करने हेतु अधिकृत किया गया है। इस अवसर पर आफरी निदेशक डॉ. टी.एस. राठौड़ ने बताया कि शुष्क पारिस्थितिकी तंत्र विश्व के अत्यन्त दुश्कर इकोसिस्टम में से एक है, क्योंकि यहां के आसपास के क्षेत्रो में पर्यावरणीय बदलाव के चलते इसका तुरन्त प्रभाव पड़ रहा है। अतः इस क्षेत्र का प्रंबधन इस प्रकार से करना जरूरी है जिससे पारिस्थितिकि बदलाव में परिवर्तन किए बिना जीवन तंत्र को बनाये रखा जा सके। उन्होंने बताया कि आफरी मृदा एवं जल संरक्षण, समस्या के क्षेत्र में वानिकी तकनीकी और जैविक खाद एवं जैव पेस्टीसाइड, कृषि वानिकी आदि द्वारा क्षेत्र की समस्या को हल करने हेतु प्रयासरत है। सिके बाद डॉ. बहुगुणा ने आफरी के वैज्ञानिको, अधिकारियों एवं कर्मचारियों से मंत्रणा कर आफरी द्वारा किये जा रहे शोध कार्यो की समीक्षा की। वे कल आफरी प्रायोगिक क्षेत्रों का भ्रमण कर जोधपुर से प्रस्थान करेंगे।

दैनिक नवज्योति

जलवायु परिवर्तन से खाद्यान्न का उत्पादन प्रभावित

भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद् देहरादून के महानिदेशक ने किया आफरी का दौरा

जोधपुर, 20 जून। जलवायु परिवर्तन से निपटना आज विश्व भर में सबसे प्रमुख समस्या है। इसके कारण कही बाढ तो कही सूखा जैसी परिस्थितिया हो रही है। इन सभी के सम्मिलित प्रभाव से खाद्यान्न का उत्पादन भी प्रभावित होता है जिसका प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से प्रभाव सामाजिक एवं आर्थिकी पर पडता है। यह उद्गार भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद्, देहरादून के महानिदेशक डॉ. वी.के. बहुगुणा ने शुष्क वन अनुसंधान संस्थान (आफरी) में पत्रकारो से बातचीत करते हुए व्यक्त किए।

डॉ. बहुगुणा ने बताया कि कबाइली लोगों के लिए बनाये गये वानिकी कानून से उन्हे स्थानीय वानिकी पर अधिकार तो मिला है परन्तु आज इस बात की जरूरत है कि इन क्षेत्रों में किस प्रकार टिम्बर एवं अन्य अकाष्ठ उत्पादों का उत्पादन बढ़ाकर इन कबाइली क्षेत्रों की आर्थिक उन्नति बढाई जाए। उन्होने बताया कि आज की आवश्यकता है कि किसानों के आस-पास की भूमि ने नवीन वानिकी तकनीको का उपयोग कर उत्पादन बढाया जाए। जिससे उनकी आर्थिक उन्नति हो सके। मरू क्षेत्र के बारे में डॉ. बहुगुणा ने बताया कि गाँवो मे परम्परागत एवं गैर परम्परागत तकनीको के साथ वैज्ञानिक ढंग से वर्षा जल संरक्षण, कृषि वानिकी आदि को अपनाना चाहिए जिससे जल एवं मृदा संरक्षण के साथ उत्पादकता बढाकर क्षेत्र की आर्थिक - सामाजिक उन्नति हासिल की जाए।

डॉ. बहुगुणा ने बताया कि भारत में वानिकी 150 वर्ष से अधिक पुरानी हो चुकी है तथा इस वर्ष को अंतराष्ट्रीय वानिकी वर्ष के रूप में मनाया जा रहा है। इसके उपलक्ष मे 22 से 25 नवम्बर तक नई दिल्ली मे भारतीय वानिकी कांग्रेस का आयोजन किया जा रहा है जिसमें देश विदेश के 100 से अधिक विषय विशेषज्ञ भाग लेगें। इस कांग्रेस द्वारा वनों का आम जनता के लिए उपयोगी बनाने एवं वनो एवं वन उत्पादो से देश की आमदनी बढाने आदि के लिए मंथन किया जायेगा। इससे वानिकी के भावी शोध कार्यक्रमों की रूपरेखा (शेष पृष्ठ सात पर)

TARUN

तरुण राजस्थान

जलवायु...

तैयार की जाएगी। उन्होंने बताया कि भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद्, देहरादून को ९००० का सर्टिफिकेट दिया गया है। इसके तहत् 8 संस्थान देश के विभिन्न क्षेत्रों के कार्यरत है जिसमे आफरी, राजस्थान एवं गुजरात तथा दादरा नगर हवेली में कार्यरत है। डॉ. बहुगुणा ने बताया कि भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद्, देहरादून को वानकी कार्यो का परिवेक्षण करने हेतु अधिकृत किया गया है।

इस अवसर पर आफरी निदेशक डॉ. टी.एस. राठौड ने बताया कि शुष्क पारिस्थितिकी तंत्र विश्व के अत्यन्त दुष्कर इकोसिस्टम में से एक है क्योंकि यहाँ के आस पास के क्षेत्रो में पर्यावरणीय बदलाव के चलते इसका तुरन्त प्रभाव पड रहा है। अतः इस क्षेत्र का प्रबंधन इस प्रकार से करना जरूरी है जिससे पारिस्थितकी बदलाव में परिवर्तन किए बिना जीवन तंत्र को बनाये रखा जा सके। उन्होंने बताया कि आफरी मृदा एवं जल संरक्षण, समस्या के क्षेत्र में वानिकी तकनीकी और जैविक खाद एवं जैव पेस्टीसाइड, कृषि वानिकी आदि द्वारा क्षेत्र की समस्या को हल करने हेतु प्रयासरत है। डॉ. बहुगुणा ने आफरी के वैज्ञानिको, अधिकारियों एवं कर्मचारियों से मंत्रणा कर आफरी द्वारा किये जा रहे शोध कार्यों की समीक्षा की। वे कल आफरी प्रायोगिक क्षेत्रों का भ्रमण कर जोधपुर से प्रस्थान करेंगे।

डा.बहुगुणा आज से आफरी के दौरे पर

जोधपुर, 19 जून(कासं)। भारतीय वानिकी अनुसांधन एवं शिक्षा परिषद् देहरादून के महानिदेशक डॉ. वी.के.बहुगुणा दो दिवसीय दौरे पर 20 जून को शुष्क वन अनुसांधन संस्थान(आफरी) जोधपुर आएगें। अपने आफरी के दो दिवसीय दौरे के दौरान वे वैज्ञानिकों एवं अधिकारियों से विभिन्न शोध कार्यक्रमों पर चर्चा करेंगे।

डॉ.बहुगुणा आफरी द्वारा चलायी जा रही मरू क्षेत्र की विभिन्न परियोजनओं यथा कृषि वानिकी, वर्षा जल सरंक्षण, टिब्बा स्थिरीकरण, उच्च गुणवत्ता के पादपों हेतु नर्सरी नकनीकी आदि का निरीक्षण करेंगे।

जलते दीप
20 जून 2011

बहुगुणा दो दिवसीय दौरे पर आज जोधपुर में

जोधपुर, 19 जून। भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद्, देहरादून के महानिदेशक डॉ. वी. के. बहुगुणा दो दिवसीय दौरे पर 20 जून को शुष्क वन अनुसंधान संस्थान (आफरी), जोधपुर आएंगे। डॉ. बहुगुणा उत्तराखण्ड निवासी एवं मणिपुर-त्रिपुरा कैडर के 1979 बैच के वरिष्ठतम भारतीय वन सेवा के अधिकारी हैं। डॉ. वी. के. बहुगुणा अपने आफरी के दो दिवसीय दौरे के दौरान वैज्ञानिकों एवं अधिकारियों से विभिन्न शोध कार्यक्रमों पर चर्चा करेंगे। डॉ. बहुगुणा आफरी की ओर से चलायी जा रही मरू क्षेत्र की विभिन्न परियोजनाओं यथा कृषि वानिकी, वर्षा जल संरक्षण, टिब्बा स्थिरीकरण, उच्च गुणवत्ता के पादपों हेतु नर्सरी तकनीकी आदि का निरीक्षण करेंगे। डॉ. बहुगुणा 21 जून को दोपहर में जोधपुर से प्रस्थान करेंगे।

नवज्योति

नवज्योति
20 जून 2011

डॉ. बहुगुणा आज जोधपुर आएंगे

जोधपुर, 19 जून। भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद देहरादून के महानिदेशक डॉ. वी.के. बहुगुणा दो दिवसीय दौरे पर 20 जून को शुष्क वन अनुसंधान संस्थान आफरी आएंगे। डॉ. वी.के. बहुगुणा आफरी दौरे के दौरान वैज्ञानिकों एवं अधिकारियों से विभिन्न शोध कार्यक्रमों पर चर्चा की गई। डॉ. बहुगुणा आफरी द्वारा चलायी जा रही मरू क्षेत्र की विभिन्न परियोजनाओं यथा कृषि वानिकी, वर्षा जल संरक्षण, टिब्बा स्थितिकरण, उच्च गुणवत्ता के पादपों हेतु नर्सरी तकनीकी आदि का निरीक्षण करेंगे। डॉ. बहुगुणा 21 जून को दोपहर में जोधपुर से प्रस्थान करेंगे।

तरुण राजस्थान
20 जून 2011

भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद्, देहरादून के महानिदेशक का आफरी दौरा

मरु लहर न्यूज

जोधपुर, 19 जून। भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद्, देहरादून के महानिदेपक डॉ. वी. के. बहुगुणा दो दिवसीय दौरे पर दिनांक 20 जून 2011 को शुष्क वन अनुसंधान संस्थान (आफरी), जोधपुर आएगें। डॉ. बहुगुणा उत्तराखण्ड निवासी एवं मणिपुर-त्रिपुरा कैडर के 1979 बैच के वरिष्ठतम भारतीय वन सेवा के अधिकारी हैं। डॉ. बहुगुणा ने डण्बैण् जन्तु विज्ञान की डिग्री सन् 1975 में गढवाल विष्वविद्यालय से प्राप्त की। ए. आई. एफसी. में पोस्ट ग्रेजुएट डिप्लोमा भारतीय वन कॉलेज देहरादून से, अधिस्नातक (डण्बैण्) 1988 में रिसोर्स मैनेजमैण्ट में एडिनवर्ग विष्वविद्यालय से तथा डॉक्टर ऑफ फिलॉसोफी ''फोरेस्ट इकोसिस्टम'' 1990 में एच.एन.बी., गढवाल यूनीवर्सिटी से किया है।

डॉ. बहुगुणा विभिन्न राष्ट्रीय एवं अर्न्तराष्ट्रीय पुरस्कारों से सम्मानित हो चुके है, इनमें कॉमनवैल्थ फोरेस्ट्री एसोसियेषन क्वीन अवार्ड 2000, सेठ मेमोरियल पुरस्कार, 1986 एवं 1989 तथा ब्रांडिस मेमोरियल पुरस्कार, 1987 एवं 1989 प्रमुख हैं। इसके अतिरिक्त उन्हें त्रिपुरा फोरेस्ट डेवलपमैण्ट कॉर्पोरेषन के सी.एम.डी. के रूप में प्रतिष्ठित ई.एम.पी.आई. - इण्डियन एक्सप्रैस इन्नोवेषन पुरस्कार, 2006 तत्कालीन राष्ट्रपति श्री ए.पी.जे. अब्दुल कलाम द्वारा दिया गया। डॉ बहुगुणा को इन्स्टीट्यूट आ..इकोनोमिक ग्रोथ, नई दिल्ली द्वारा उद्योग रत्न से भी सम्मानित किया जा चुका है।

डॉ बहुगुणा भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद्, देहरादून के महानिदेपक बनने से पूर्व तकनीकी विषेषज्ञ (वानिकी, प्रषासन एवं वित्तिय) के रूप में अतिरिक्त सचिव स्तर के अधिकारी पद पर नेषनल रेनफेड ऑथेरिटी (एन.आर.ए.ए.), में कार्यरत थे। डॉ. वी. के. बहुगुणा अपने आफरी के दो दिवसीय दौरे के दौरान वैज्ञानिकों एवं अधिकारियों से विभिन्न शोध कार्यक्रमों पर चर्चा करने के साथ स्थानीय प्रैस प्रतिनिधियों से शाम 4.00 बजे (20 जून, 2011) भी मिलेगें। डॉ. बहुगुणा आफरी द्वारा चलायी जा रही मरू क्षेत्र की विभिन्न परियोजनाओं यथा कृषि वानिकी, वर्षा जल संरक्षण, टिब्बा स्थिरीकरण, उच्च गुणवत्ता के पादपों हेतु नर्सरी तकनीकी आदि का निरीक्षण करेगें। डॉ. बहुगुणा 21 जून 2011 को दोपहर में जोधपुर से प्रस्थान करेगें।